Nature of Leadership: 23/06/2021

नेतृत्व का अर्थ व्यक्ति की योग्यता से नहीं वरन् इसका आशय उसकी कार्य लेने की क्षमता से है। किसी समूह पर किसी प्रकार हावी हो जाना ही नेतृत्व का लक्षण नहीं है वरन् स्वीकारा गया नेतृत्व अपने लक्ष्य की पूर्ति में सफल होता है। <u>टैरी</u> ने इसकी परिभाषा देते हुए कहा है कि **"नेतृत्व आपसी उद्देश्यों के लिए व्यक्तियों द्वारा स्वेच्छा से प्रभावित करने की क्रिया है।"** अर्थात् नेतृत्व समुदाय द्वारा स्वीकार किया जाता है, थोपा नहीं जाता।

कुशल नेतृत्व के लिए व्यक्तियों की खोज करने की दृष्टि से विभिन्न परीक्षणों का सहारा लिया जाता है। हस्तलिपि परीक्षण, ज्योतिषीय पूछ-ताछ, पूर्व वृतान्त सम्बन्धी जानकारी, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षणस्तर आदि मुख्य मापक माने जाते है। एक कुशल नेता संगठन में दोहरा कार्य करता है, वह एक ओर प्रबन्ध के हितों की रक्षा करता है तो दूसरी ओर लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

<u>सेकलर-हडसन</u> के शब्दों में, "बड़े-2 संगठनों में नेतृत्व की परिभाषा किसी उद्यम के प्रयोजनों की प्राप्ति हेतु समान प्रयत्न द्वारा व्यक्तियों को प्रेरित तथा प्रभावित करने के रूप में की जा सकती है।"

<u>बनार्ड</u> के अनुसार नेतृत्व "व्यक्तियों के व्यवहार को उत्तमता की ओर निर्देश करता है जिसके द्वारा वे किसी संगठित प्रयत्न में संलग्न लोगों या उनकी क्रियाओं का मार्गदर्शन करते हैं।"

मिलेट का यह कहना है कि "नेतृत्व प्रायः परिस्थितियों के अनुसार बनता या बिगड़ता है।"

अर्थात् नेतृत्व की दो आवश्यक परिस्थितियाँ हैं:

a. राजनीतिक (Political)

b. संस्थागत (institutional)।

प्रशासकीय नेतृत्व की राजनीतिक परिस्थितियों से ~~इसका~~ तात्पर्य बाहरी राजनीतिक संचालन तथा नियन्त्रण के प्रति सजग रहने से है तथा नेतृत्व की संस्थागत परिस्थितियों से तात्पर्य आन्तरिक प्रवर्तन (operation) की आवश्यकताओं के प्रति सजग रहने और प्रशासनिक अभिकरण को गतिशील बनाये रखने की आवश्यकता से है।

कूँज तथा ओडोनेल ने नेतृत्व प्राप्ति हेतु तीन विभिन्न उपागमों - लक्षणवादी (traitist), स्थितिवादी (situationist) तथा तत्ववादी (elementalist) - का संकेत दिया है। लक्षणवादियों ने उद्गमनात्मक पद्धति को अपनाया है, जिसमें योग्य नेता का निरीक्षण करके प्रत्येक के लक्षणों की गणना की गयी है। उनमें एक समान गुणों को आवश्यक माना गया है और नेतृत्व की शक्ति को नापने के लिए मापदण्ड के रूप में एक मापक प्रस्तुत किया गया है।

टीड (Tead), बर्नार्ड तथा श्रोप इस उपरोक्त पद्धति के पोषक हैं। परन्तु इस सिद्धान्त की मुख्य कठिनाई यह है कि नेतृत्व के समान लक्षणों का कोई प्रमाण नहीं है। नेतृत्व के लिए समान गुणों पर लक्षणवादी बहुत कम सहमत हैं और इसप्रकार सर्वमान्य स्वीकार्य लक्षण उपस्थित करने में वे असफल रहे हैं।

स्थितिवादी उपागम का सम्बन्ध नेताओं को ढूंढ़ निकालने के लिए किसी तरीके को खोज निकालने से है। उनका यह अनुमान है कि कुछ निश्चित गुणात्मक तत्व जैसे आचरण, प्रज्ञा, स्थायित्व तथा अनुलम्बन आदि नेताओं में प्रारम्भ से ही होना आवश्यक है। उनका अगला

कारण यह है कि किसी नेता को किसी समूह के साथ रखकर यह देखा जाय कि वह विशेष स्थितियों में, जिनका निर्माण प्रयोगात्मक वास्तविकता की दृष्टि को ध्यान में रखकर किया जाता है, किस प्रकार कार्य करता है। जर्मनी तथा संयुक्त राज्य अमेरिका व अन्य पश्चिमी देशों में सेना तथा पुलिस अधिकारियों के चुनाव के लिए केवल प्रयोगात्मक रूप से इस उपागम का प्रयोग किया जाता है।

तत्ववादी उपागम के समर्थक नेतृत्व सम्बन्धी गुणों की व्याख्याओं को नेतृत्व की सफलता से इन्हें सम्बद्ध करने और इस प्रकार प्रत्येक के लिए मूल्य का विकास करने में विश्वास रखते हैं। फिर भी कुछ व्यक्ति नेताओं के अनुयायियों का अध्ययन करके नेताओं को समझने का प्रयास करते हैं।

कुन्ट्ज़ के अनुसार नेता चार मुख्य कार्य करता है —

1. उद्देश्यों का निर्धारण (determination of objectives),
2. साधनों का प्रबन्ध (Manipulation of means),
3. कार्य के साधनों का नियन्त्रण (control of the instrumentality of action),
4. समन्वित कार्य का उद्दीपन (stimulation of co-ordinated action).

Umaichand
23/06/2021